बच्चों के समाजीकरण में पाठ्यपुस्तकों की सम्प्रेषण भूमिका

❒ तरुणा अरोड़ा

सारांश :-

बच्चे समाजीकरण की प्रक्रिया का अहम् हिस्सा है। समाजीकरण का बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर गहरा असर पड़ता है। यह प्रक्रिया बच्चे के जन्म से शुरू होकर आजीवन चलती है। परिवार, पीयर ग्रुप, पड़ोस, जनसंचार माध्यम, विद्यालय और पाठ्यपुस्तकें सभी उसके समाजीकरण को प्रभावित करते हैं। पाठ्यपुस्तकें बच्चे का समाज से सामंजस्य से बैठाने में उसकी सहायता करती हैं। पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु सीधे बच्चे के मानसिक शारीरिक विकास को प्रभावित करती है। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु सही हो। पाठ की विषयवस्तु जानने के उद्देश्य से चार विभिन्न विद्यालयों की प्रथम से पांच कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया गया।

महत्वपूर्ण शब्द :- विकास, समाजीकरण, सम्प्रेषण

प्रस्तावना

बच्चे समाज का अभिन्न अंग होते हैं। उन्हें समाज के अनुरूप ढालने की जिम्मेदारी वयस्कों की होती है। बच्चों का किस प्रकार से पालन पोषण किया जाए कि वे समाज के अच्छे सदस्य बन सकें यह देखना समाज का दायित्व है। यह बेहद महत्वपूर्ण प्रक्रिया है क्योंकि इसी प्रक्रिया से समाज ज़िंदा रहता है। इसलिए समाजशास्त्रियों, शिक्षाविदों व मनोवैज्ञानिकों में बच्चा सदैव अध्ययन का केन्द्र बिन्दु रहा है। समाजीकरण न केवल सांस्कृतिक हस्तांतरण की प्रक्रिया है अपितु संस्कृति का अहम पहलू भी है। इसी प्रक्रिया से समाज का अस्तित्व बना रहता है। इसके अतिरिक्त समाजीकरण की प्रक्रिया का बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चा जन्म से सामाजिक नहीं होता वह समाज में रहकर ही मान्यता के अनुरूप कार्य करता है। यानि समाजीकरण की प्रक्रिया के तहत व्यक्ति मानव कल्याण के लिए परस्पर निर्भर होकर व्यवहार करना सीखता है और ऐसा करने में सामाजिक आत्मनियन्त्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सन्तुलित व्यक्तित्व का अनुभव करता है। यह प्रक्रिया बच्चे के जन्म से शुरू होती है और आजीवन चलती रहती है।

समाजीकरण और संचार

समाजीकरण और संचार का महत्वपूर्ण पहलू है भाषा सीखना। भाषा के माध्यम से बच्चा साक्षर व विचाराभिव्यक्ति में सक्षम हो जाता है। यह प्रक्रिया प्रत्युत्तर में समाजीकरण की प्रक्रिया तेज़ करती है। इसमें स्कूल, अध्यापक, दोस्त सभी उसके सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बन जाते हैं। संचार ही एकमात्र कारक हैं जिससे तय होता है कि हम एक-दूसरे के साथ किस तरह सम्बन्ध बनाते हैं। संचार समाजीकरण प्रदान करता है और समाजीकरण का परिणाम है संचार। इस प्रक्रिया में संचार की विषयवस्तु भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि एक ही प्रकार विषयवस्तु की पुनरावृत्ति एक विशिष्ट मूल्य प्रणाली या व्यवहार के तौर-तरीकों को मज़बूती प्रदान करती है। उचित विषयवस्तु के अभाव में सीखने की प्रक्रिया में शून्य उत्पन्न हो सकता है। अतः समाजीकरण की प्रक्रिया के लिए संचार करना ही आवश्यक नहीं है अपितु यह और भी ज़रूरी है कि विषयवस्तु क्या है। इसी कारण समाजीकरण अध्ययन में अधिकतर शोध प्रारम्भिक समाजीकरण पर केन्द्रित होते हैं।

❒ लेखिका वायएमसीए यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, फरीदाबाद में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

पाठ्यपुस्तकें एवं संचार

विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें शिक्षण का महत्वपूर्ण औजार हैं। पाठ्यपुस्तकें शैक्षणिक माध्यम के रूप में बच्चे के दिमाग पर काफी प्रभाव डालती हैं। बच्चा शिक्षा ग्रहण करते समय पाठ्यपुस्तकों के सम्पर्क में अवश्य आता है। पाठ्यपुस्तकों के बार-बार पढ़ने पर विद्यार्थी विचार व धारणाओं का फ्रेम बना लेते हैं जो उनके शारीरिक-मानसिक विकास में सहायता प्रदान करता है। विद्यालय की पाठ्यपुस्तकें सामाजिक विचारधारा, राजनीति, संस्कृति, भौगोलिक ज्ञान व सामाजिक मान्यताओं के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी शिक्षण संस्थानों में पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ही अध्यापक नियमित अध्यापन करने में सक्षम होते हैं।

संचार के विश्वकोष के अनुसार - पाठ्यपुस्तकें एक समाज की जटिल प्रणाली का हिस्सा है जिसमें अध्यापक, अभिभावक और सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली शामिल है। यह समाज के उस दृष्टिकोण व मूल्यों को दर्शाती है जिसमें यह समाज विकसित हुआ है। यह विभिन्न समाजों में नई पीढ़ी के समाजीकरण के बेहद महत्वपूर्ण औजारों में से एक है। वेरोनिका केलमस ने अपने अध्ययन में लिखा है कि स्कूली पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य शिक्षण माध्यमों को समाजीकरण अभिकर्ता के रूप में बहुत महत्व दिया जाता है। इसलिए ऐसा माना जाता है तथा प्रमाणित करने का प्रयास भी किया जाता है कि स्कूली पाठ्यपुस्तकें समाज के प्रभावी विचारों, विश्वासों, सलाहों, आचार-व्यवहार, जीवन मूल्यों और नियमों को परिलक्षित करने का प्रयास करती हैं।

स्कूली पाठ्यपुस्तकें संचार की प्रक्रिया में सहभागी शिक्षार्थी लोगों के अनुभवों को प्रभावित करती हैं। पाठ्यपुस्तकें समाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में मूल्यों और सिद्धान्तों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए अभिषक्त अर्थात् समाज संघटक हैं। अतः यह आवश्यक है कि समाज के जीवन मूल्यों को सही ढंग से विद्यार्थियों तक पहुंचाया जाए ताकि उनका समाजीकरण सही दिशा में हो और उनके जीवन में कोई शून्य उत्पन्न नहीं हो।

शोध का उद्देश्य

पाठ्यपुस्तकों की सम्प्रेषण क्षमता अध्ययन करना और पाठ्यपुस्तकों में किस प्रकार मूल्य प्रणाली को प्रस्तुत किया जा रहा है, का अध्ययन करना है। पाठ की विषयवस्तु का अध्ययन करना भी इस शोध का एक अन्य उद्देश्य है।

समस्या का प्रारूप

भारतीय जीवन शैली संस्कार आधारित जीवन शैली हैं संस्कारों का महत्व इतना है कि शरीर जब पंचतत्व में विलीन होता है तो उसे भी हमने दाह संस्कार कहा है। संस्कारों की दृष्टि में परिवार के बाद विद्यालय को दूसरा स्थान प्राप्त है। विद्यालय में बच्चा अपने सहपाठियों, आचार्यो व अन्य कर्मचारियों के संसर्ग में, उनके आचरण व व्यवहार से बहुत कुछ सीखता है। इसके अलावा एक और भी संसाधन उसके पास होता है वह होता है उसका बस्ता और उसकी पाठ्यपुस्तकें।

विद्यालय के पूरे कालखण्ड में ये पुस्तकें ही उसकी परममित्र होतीं है और घर पहुंचने पर भी उसे इन पाठ्यपुस्तकों से ही दो-चार होना पड़ता है। यही उसके जीवन निर्माण का आधार बनती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का विषय भी यही है "बच्चों के समाजीकरण में पाठ्यपुस्तकों की सम्प्रेषण भूमिका"। यानि बच्चों को समाजपयोगी संस्कारित, देशभक्त और एक सक्षम नागरिक बनाने में पाठ्यपुस्तकों का कितना योगदान है? कौन-कौन से जीवन मूल्यों को बच्चा पाठ्यपुस्तकों से ग्रहण कर सकता है। वर्तमान पाठ्यपुस्तकें कौन-कौन से मूल्य सम्प्रेषित कर रही हैं यही जानना इस शोध का उद्देश्य है। इस शोध के केन्द्र में पहली से पाचवीं कक्षा तक के विद्यार्थी हैं। चार विभिन्न विद्यालयों केन्द्रीय विद्यालय, डी.ए.वी., कान्वेंट स्कूल और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. से सम्बन्धित विद्यालय शोध के लिए चुने गए हैं। इसमें प्रथम से पांचवी कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण है।

पूर्वगामी शोध अध्ययन

पाठ्यपुस्तकों के महत्व पर शोध कई दशकों से होता

आया है। पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन एवं शोध-कार्य में पाठ्यपुस्तकों के चयन, सुधार, मूल्यांकन एवं उनके राष्ट्रीयकरण सम्बन्धी सभी पहलुओं पर गहन अध्ययन किया गया है।

इस प्रक्रिया की शुरूआत बीसवीं शताब्दी में हो गई थी। 1901 से 1930 तक तो शोधकर्ता पाठ्यपुस्तकों के चयन में उलझे रहे। 1931 से 1950 तक के कालखण्ड में पाठ्यपुस्तकों में शब्दावली, चित्रावली, अर्हतत्व व मुद्रण सम्बन्धी विषयों में सुधार होता दिखाई पड़ा है। 1951 से 1970 तक के कालखण्ड में पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से उत्पन्न पाठ्यपुस्तकों के समाजीकरण में महत्व, त्रुटियों और सुधारों की आवश्यकता ने ही पाठ्यपुस्तकों के आलोचकों और सुधारकों का ध्यान आकर्षित किया।

साथ ही 1950 से 1975 तक की काल अवधि में राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन भी किया गया। इसी समयावधि में पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, मूल्यांकन व सर्वेक्षण भी किया गया। विदेशों में भी इस दिशा में कई प्रयास किए गए। सन् 1994 में इस्राइल में प्रो. डेनियल बार ताल ने शिक्षण मंत्रालय द्वारा स्वीकृत हिब्रू भाषा और साहित्य, इतिहास, भूगोल और नागरिक अध्ययन की 124 पाठ्यपुस्तकों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया था। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि पाठ्यपुस्तक सामाजिक आस्थाओं के प्रति मानसिक विरोध की सामान्य प्रकृति को किस सीमा तक प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार से ग्रीक में पाठ्यपुस्तकों के अन्तः सांस्कृतिक अध्ययन के शोध केन्द्र द्वारा 1996-98 में बाल्कन देशों की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन 'पड़ोसियों की छवि' नामक शीर्षक के अन्तर्गत किया। वेरोनिका केलमस (वर्ष 2003) ने पाठ्यपुस्तकीय प्रवचन और सामाजिक सन्दर्भ ज्ञात करने तथा समाजीकरण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तकों का योगदान ज्ञात करने के लिए अनुसन्धान किया। इस अध्ययन का केन्द्र बिन्दु था स्कूली पाठ्यपुस्तकों में तर्कमूलक परिवर्तन और समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन के बीच सम्बन्धों की खोज करना। इसी प्रकार क्रिस्टीनकायमर (वर्ष 2003) ने ''निरन्तरता और मूल्यों में परिवर्तन पर ताईवान जूनियर हाई स्कूल की साहित्यिक पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण विषय शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य था कि ताईवानी अधिकारियों की दृष्टि में कौन से ऐसे आदर्श जीवन मूल्य हैं जो आज के बच्चों को आत्मसात् करने चाहिए। प्रस्तुत शोध कार्य में बच्चों के समाजीकरण में पाठ्यपुस्तकों का योगदान पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। उक्त अध्ययन से यह शोध इस प्रकार भिन्न है कि उक्त अध्ययन सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में किए गए हैं। प्रस्तुत शोध पाठ्यपुस्तकों की सम्प्रेषण क्षमता पर केन्द्रित है। किताबों में प्रस्तुत मूल्यों के अलावा उनकी विषयवस्तु पर भी ध्यान केन्द्रित किया है। उनमें कितनी विविधता है और किस प्रकार जानकारी विद्यार्थियों को दी जा रही है।

अध्ययन का महत्व

पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय संस्कृति, राष्ट्रीय विचारधारा और मूल्यों को लिखित संदेशों के रूप में चयनित समाज के सम्प्रेषक और श्रोताओं में सम्प्रेषित करती है। 6 अक्टूबर सन् 1961 पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि बच्चों की पाठ्यपुस्तकों को वयस्कों की किताबों की अपेक्षा ज्यादा टेलेंट और कौशल की जरूरत होती है। अतः बच्चों की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। इससे न केवल सीखने की प्रक्रिया ही प्रभावित होती है अपितु राष्ट्र निर्माण पर भी इसका असर पड़ता है। शिक्षकों को मालूम होना चाहिए कि विद्यार्थी को क्या सीखना चाहिए। समाजीकरण की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए सम्भवतः यह आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तक अधिक विषयपूरक हो, अधिक मोहक हो और अपने समाज के मूल्यों का सही चित्रण करती हो। यह संचार के सिद्धान्तों के अनुरूप ही है। यदि पुस्तकें संचार के सिद्धान्तों के अनुरूप होंगी तभी वे बच्चे के समाजीकरण में भूमिका निभा सकेगी।

अध्ययन की सीमाएं

1. यह अध्ययन केवल नैतिक शिक्षा, हिन्दी, अंग्रेजी व सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन तक

सीमित है।

2. अध्ययन केवल प्रथम से पांचवी कक्षा तक सीमित है।
3. अध्ययन में केवल डी.ए.वी., कॉन्वेंट स्कूल, एन.सी.ई. आर.टी. व डी.पी.ई.पी. और एच.बी.एस.ई. की पुस्तकें ली गई हैं।
4. इसमें बेसिक पुस्तकें ली गई हैं। सप्लीमेंट्री व पुस्तक के अभ्यास को शामिल नहीं किया गया है।
5. अध्ययन केवल हरियाणा तक सीमित है।

शोध विधि

अध्ययन की आवश्यकता अनुसार अन्तर्वस्तु विश्लेषण पद्धति को अपनाया गया। अध्ययन के लिए चार विभिन्न विद्यालयों की हिन्दी, अंग्रेजी, नैतिक शिक्षा और सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का चयन किया गया। पाठ्यपुस्तकों में कुल 1402 अध्याय थे और यादृच्छिकी संख्या सारणी का प्रयोग कर 140 अध्यायों का प्रतिदर्श लिया गया। प्रतिदर्श के पश्चात कोड बुक का निर्माण किया गया जिसमें 22 चर थे।

जैसे पाठ में पात्रों की नामकरण पद्धति, भौगोलिक परिवेश, चित्रों की अन्तर्वस्तु, मूल्य प्रणाली। इनके अध्ययन के लिए पांच प्रकार के मूल्यों के संच एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित मूल्य, युनेस्को, आल इंडिया ऐसोसिएशन ऑफ कैथोलिक स्कूल, पांच सार्वभौमिक मूल्य और नैतिक शिक्षा के न्यूनतम कार्यक्रम (1995) द्वारा अनुमोदित मूल्यों को कोड बुक में सम्मिलित किया गया।

सांख्यकीय संगणना

प्रत्येक अध्याय में दी गई विषयवस्तु व मूल्यों का अध्ययन कोड बुक के विभिन्न चरों के अनुसार किया गया। शोध के उद्देश्यों के अनुसार प्रमुख निष्कर्षों की तालिकाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम तालिका में कोड बुक में शामिल किए गए पांच में से चार मूल्य संचों को लिया जा रहा है। इन मूल्य संचों का वर्गीकरण एक समान होने के कारण इन्हें एक साथ लिया गया।

तालिका 1

पाठों में निहित मूल्यों को दिया महत्व

मूल्यों की सूची	केन्द्रीय विद्यालय	डी.ए.वी.	कॉन्वेंट स्कूल	डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई	कुल
1. देश प्रेम	6 4.2	9 6.3	3 2.1	3 2.1	21 14.7
2. उचित आचरण	6 4.2	11 7.7	9 6.3	0	26 18.2
3. शिष्टाचार	1 0.7	5 3.5	6 4.2	1 0.7	13 19.1
4. श्रम का महत्व	7 4.9	4 2.8	1 0.7	0	12 8.4
5. प्रकृति का सम्मान	4 2.8	3 2.1	7 4.9	1 0.7	15 7.5
6. साहस	2 1.4	5 3.5	1 0.7	1 0.7	9 6.3
7. भाईचारा	0	3 2.1	4 2.8	1 0.7	8 5.6
8. देश भक्ति	2 1.4	2 1.4	1 0.7	2 1.4	7 4.9
9. दयाभाव	2 1.4	3 2.1	2 1.4	1 0.7	8 5.6
10. शोध एवं मूल्यांकन	2 1.4	3 2.1	1 0.7	1 0.7	7 4.9
11. उत्सुकता	1 0.7	1 0.7	1 0.7	3 2.1	6 4.2
12. सामाजिक दायित्व की भावना	2 1.4	0	3 2.1	0	5 3.5
13. निष्ठा	1 0.7	3 2.1	1 0.7	0	5 3.5
14. सुव्यवस्थित	1 0.7	2 1.4	2 1.4	0	5 3.5
15. सहयोग	2 1.4	1 0.7	2 1.4	0	5 3.5

व्याख्या

समाजीकरण की प्रक्रिया में नई पीढ़ी द्वारा विशिष्ट समाज के सार्वजनिक रूप से मान्यता प्राप्त जीवन मूल्यों को आत्मसात् किया जाता है। इन्हीं जीवन मूल्यों के आधार पर नई पीढ़ी को जीवन की दिशा मिलती है। पाठ्यपुस्तकें इन मूल्यों के सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम मानी जाती हैं। अतः समाज व राष्ट्र सम्बन्धी मूल्यों का पाठ्यपुस्तकों में शामिल करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी एक समग्र मनुष्य के साथ-साथ एक अच्छे राष्ट्र व समाज का कर्णधार बन सके। इसी दृष्टिकोण से अध्यायों में मूल्यों का अध्ययन किया गया उनसे प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि उक्त 16 मूल्यों को अध्यायों में अत्याधिक महत्व दिया गया। इसमें प्यार को 14.7ः महत्व दिया गया है अर्थात् 144 में से 30 अध्यायों में यह मूल्य है। केन्द्रीय विद्यालय इसे 5.6 प्रतिशत, डी.ए.वी. 7.7 प्रतिशत, कॉन्वेंट ने 2.8 प्रतिशत और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने 4.9 प्रतिशत महत्व दिया है।

उचित आचरण को सर्वाधिक महत्व मिला है। 26 बार भिन्न-भिन्न अध्यायों में इस मूल्य को प्राथमिकता दी गई है। केन्द्रीय विद्यालय ने 4.2 प्रतिशत, डी.ए.वी. ने 7.7 प्रतिशत, कॉन्वेंट ने 6.3 प्रतिशत महत्व दिया है। शिष्टाचार को कुल 13 अध्यायों में प्राथमिकता दी गई है। केन्द्रीय विद्यालय ने केवल एक बार ही इसे उभारा है। डी.ए.वी. ने 3.5 प्रतिशत, कॉन्वेंट ने 4.2 प्रतिशत और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने इसे 0.7 प्रतिशत ही वरीयता दी है। श्रम का महत्व मूल्य कुल 12 बार भिन्न-भिन्न अध्यायों में दर्शाया गया है।

प्रकृति का सम्मान करने की शिक्षा कुल 15 यानि 7.5 प्रतिशत अध्यायों में दी गई है। केन्द्रीय विद्यालय के अध्यायों में 42.8 प्रतिशत बार यह मूल्य आया है। डी.ए.वी. की किताबों में 2.1 प्रतिशत, कॉन्वेंट में सर्वाधिक 4.9 प्रतिशत और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने 0.7 प्रतिशत महत्व दिया।

साहस मूल्य को 6.3 प्रतिशत महत्व मिला है। विद्यालयानुसार वरीयता क्रम इस प्रकार है - डी.ए.वी. 3.5 प्रतिशत, केन्द्रीय विद्यालय 1.4 प्रतिशत, कॉन्वेंट 0.7 प्रतिशत और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. 0.7 प्रतिशत है। भाईचारा को 8 यानि 5.6 प्रतिशत अध्यायों में प्राथमिकता दी गई है। देशभक्ति को केवल सात (4.9 प्रतिशत) अध्यायों में ही उभारा गया। केन्द्रीय विद्यालय, डी.ए.वी. और डी.पी.ई.पी. व एच.बी. एस.ई. तीनों ही संस्थानों ने इसे बराबर यानि 1.4 प्रतिशत महत्व दिया है। कॉन्वेंट ने 0.7 प्रतिशत महत्व दिया है।

दयाभाव आठ (5.6 प्रतिशत) अध्यायों में उभारा गया है। केन्द्रीय विद्यालय व कॉन्वेंट स्कूल ने बराबर महत्व यानि 1.4 प्रतिशत दिया है। डी.ए.वी. 2.1 प्रतिशत व डी.पी.ई. पी. व एच.बी.एस.ई. ने 0.7 प्रतिशत वरीयता दी है। शोध एवं मूल्यांकन को कुल सात बार यानि 4.9 प्रतिशत महत्व दिया है। केन्द्रीय विद्यालय ने दो बार 1.4 प्रतिशत, डी.ए.वी. ने तीन बार यानि 2.1 प्रतिशत, कॉन्वेंट व डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने बराबर 0.7 प्रतिशत महत्व दिया।

उत्सुकता को कुल छह (4.2 प्रतिशत) उभारा गया। इस मूल्य को डी.ए.वी., केन्द्रीय विद्यालय और कॉन्वेंट स्कूल ने बराबर 0.7 प्रतिशत महत्व दिया है और डी.पी.ई.पी. व एच.बी. एस.ई. ने तीन बार (2.1 प्रतिशत) महत्व दिया है। सामाजिक दायित्व की भावना कुल पांच (3.5 प्रतिशत) बार उभरी है। केन्द्रीय विद्यालय ने 1.4 प्रतिशत और कॉन्वेंट स्कूल ने 2.1 प्रतिशत प्राथमिकता दी है। डी.ए.वी. व डी.पी.ई.पी. व एच.बी. एस.ई. ने इसे महत्व नहीं दिया।

निष्ठा को केन्द्रीय विद्यालय व कॉन्वेंट स्कूल ने बराबर 0.7 प्रतिशत महत्व दिया है। डी.ए.वी. स्कूल ने तीन बार यानि 2.1 प्रतिशत महत्व दिया है।

सुव्यवस्थित रहने की शिक्षा पांच अध्यायों में दी गई है। डी.ए.वी. व कॉन्वेंट स्कूल ने बराबर यानि 1.4 प्रतिशत महत्व दिया है। केन्द्रीय विद्यालय ने एक बार यानि 0.7 प्रतिशत महत्व दिया है। डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने इसे नहीं उभारा। सहयोग की भावना को पांच अध्यायों में ही उभारा गया है। केन्द्रीय विद्यालय व कॉन्वेंट स्कूल ने बराबर महत्व दिया है। इसे 1.4 प्रतिशत अध्यायों में दर्शाया गया है। डी.ए.वी. ने 0.7 प्रतिशत ही महत्व दिया और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई.ने वरीयता नहीं दी। इस तालिका से ज्ञात होता है कि पाठ्यपुस्तकों में कई मूल्य उभरे हैं तो कई महत्वपूर्ण अहिंसा, सत्य, शांति जैसे सार्वभौमिक मूल्यों की प्राथमिकता नहीं दी है।

तालिका - 2

अतिमहत्वपूर्ण परन्तु अपेक्षाकृत उपेक्षित मूल्य

मूल्यों की सूची	केन्द्रीय विद्यालय	डी.ए.वी.	कॉन्वेंट स्कूल	डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई	कुल
सत्य	1 0.7	0	1 0.7	0	2 1.4
अहिंसा	1 0.7	1 0.7	0	1 0.7	3 2.1
शांति	0	1 0.7	1 0.7	2 1.4	4 2.8
राष्ट्रीय एकता	1 0.7	0	2 1.4	0	3 2.1
लोकतान्त्रिक भावना	1 0.7	0	1 0.7	0	2 1.4
मानव सेवा	0	2 1.4	1 0.7	0	3 2.1
मानवता	0	2 1.4	0	0	2 1.4
आत्मनिर्भर	0	1 0.7	0	1 0.7	2 1.4

प्राइमरी स्तर की कक्षाओं में बच्चे के भविष्य की नींव रखी जाती है। यह नींव जितनी मज़बूत होगी उतना बच्चे का भविष्य उज्ज्वल होगा। अतः यह आवश्यक है कि कुछ सार्वभौमिक मूल्यों को शुरुआत से सिखाया जाए। परन्तु उक्त तालिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ अति महत्वपूर्ण मूल्यों की उपेक्षा की गई है।

सत्य मूल्य को केवल दो अर्थात् 1.4 प्रतिशत बार ही प्राथमिकता दी गई है। केन्द्रीय विद्यालय और कॉन्वेंट स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में बराबर एक बार यानि 0.7 प्रतिशत महत्व दिया गया है और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम में यह मूल्य नदारद थी।

अहिंसा को भी केवल तीन ही अध्यायों में प्राथमिकता दी गई है। इसमें कॉन्वेंट स्कूल के पाठ्यक्रम में यह मूल्य नहीं है और शेष तीनों शिक्षण संस्थाओं ने बराबर यानि एक-एक अध्याय में इस मूल्य को महत्व दिया है।

शांति जैसा सार्वभौमिक मूल्य चार अध्यायों में उभरा है। केन्द्रीय विद्यालय ने इसे प्राथमिकता नहीं दी जबकि डी.ए.वी. व कॉन्वेंट स्कूल ने एक-एक अध्याय में इसे महत्व दिया है और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने दो बार इसे प्राथमिकता दी है।

राष्ट्रीय एकता का भाव भी तीन ही अध्यायों में उभरा है। केन्द्रीय विद्यालय ने एक बार और कॉन्वेंट स्कूल ने दो बार इस मूल्य को महत्व दिया है। डी.ए.वी. और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. ने इसे नहीं दर्शाया है।

लोकतान्त्रिक भावना की भी पाठ्यक्रम में कमी है। केवल दो ही अध्यायों में इस मूल्य को प्रमुखता दी है। केन्द्रीय विद्यालय और कॉन्वेंट स्कूल ने एक-एक बार प्रमुखता दी है और डी.ए.वी. व डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई के पाठ्यक्रम में इन मूल्यों को महत्व नहीं दिया गया।

समाजसेवा का भाव तीन अध्यायों में प्रमुखता से दर्शाया गया है। डी.ए.वी. में दो बार और कॉन्वेंट स्कूल में एक बार इस भाव को प्राथमिकता दी है। केन्द्रीय विद्यालय और डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. की पाठ्यपुस्तकों में यह मूल्य अनुपस्थित है।

मानवता का मूल्य दो अध्यायों में उभरा है। केवल डी.ए.वी. के पाठ्यक्रम में इस भाव को महत्व दिया गया है। शेष तीनों शिक्षण संस्थानों ने इसे नहीं दर्शाया है।

आत्मनिर्भरता का संदेश केवल दो ही अध्यायों में प्रमुखता से मिलता है। डी.ए.वी. और कॉन्वेंट स्कूल ने इस मूल्य को एक-एक बार अध्यायों में डाला है और केन्द्रीय विद्यालय व डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम में यह मूल्य अनुपस्थित है।

उक्त तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि जिन मूल्यों को बहुतायत में हो जाता है कि जिन मूल्यों को बहुतायत में होना चाहिए था तो बेहद कम हैं। अधिकांश बार बच्चा भी किताब से प्रभावित होता है। जब ये मूल्य पाठ्यपुस्तकों में अनुपस्थित होंगे तो विद्यार्थियों व समाज में भी इन मूल्यों का अभाव हो सकता है।

तालिका - 3
पाठों की मुख्य विषयवस्तु

विद्यालय	विषयवस्त					
	परिचयात्मक	तकनीकी व वैज्ञानिक	भौगोलिक पर्यावरण व प्रकृति	ऐतिहासिक व सांस्कृतिक	सामान्य जानकारी	हास्य
केन्द्रीय विद्यालय	7 4.9	2 1.4	6 4.2	9 6.3	5 3.5	2 1.4
डी.ए.वी.	15 10.5	3 2.1	2 1.4	23 16.1	3 2.1	2 1.4
कॉन्वेंट स्कूल	15 10.5	2 1.4	5 3.5	6 4.2	6 4.2	1 1.4
डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई.	6 4.2	1 0.7	2 1.4	3 2.1	2 1.4	1 0.7
कुल	43 30.1	8 5.6	15 10.5	47 28.7	16 11.2	6 4.2

किस प्रकार की विषयवस्तु पाठों की है?इसी उद्देश्य से पाठों के विश्लेषण के लिए विभिन्न वर्ग बना दिए गए। उन पाठों का अध्ययन किया गया। पाठों की विषयवस्तु में विविधता होनी चाहिए तभी विद्यार्थी सभी प्रकार की जानकारी ग्रहण कर सकेंगे। इससे न केवल वे अपने समाज से परिचित होंगे अपितु पूरी दुनिया के सम्बन्ध में भी ज्ञान हासिल कर सकेंगे। यही ज्ञान उसके समाजीकरण व व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होता है। सारिणी में दर्शाए वर्गों में सबसे अधिक महत्व परिचयात्मक श्रेणी को मिला है। जिसमें विद्यार्थी के सामाजिक वातावरण, आर्थिक व व्याकरण सम्बन्धी जानकारी

दी गई है। परिचयात्मक अध्याय केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम में सात थे और डी.ए.वी. व कॉन्वेंट में पंद्रह थे। डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. में छह अध्याय परिचायत्मक थे। कुल 43 अध्याय इन श्रेणी में थे।

तकनीकी व वैज्ञानिक विषयवस्तु के अध्याय केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम में दो थे और डी.ए.वी. में तीन और कॉन्वेंट स्कूल में दो अध्याय थे। डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. में केवल एक अध्याय था। कुल आठ अध्याय इस विषयवस्तु के थे।

भौगोलिक पर्यावरण व प्रकृति से सम्बन्धित अध्याय केन्द्रीय विद्यालय में छह थे और डी.ए.वी. डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. दोनों में दो अध्याय उक्त विषयवस्तु के हैं। कॉन्वेंट में पांच अध्याय हैं। कुल 15 अध्याय हैं 40 अध्यायों में से जिनकी विषयवस्तु भौगोलिक पर्यावरण व प्रकृति की है।

41 अध्याय ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयवस्तु के हैं। केन्द्रीय विद्यालय के 09 अध्याय इस विषयवस्तु से सम्बन्धित हैं। डी.ए.वी. के 23 और कॉन्वेंट के छह अध्याय इस श्रेणी में आते हैं। डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. में तीन अध्याय इस विषयवस्तु के हैं।

सामान्य जानकारी जिसमें विभिन्न देशों की संस्कृति व खान-पान से सम्बन्धी जानकारी शामिल है। इस श्रेणी में कुल 16 अध्याय शामिल है। हास्य वर्ग के कुल छह अध्याय हैं जिसमें केन्द्रीय विद्यालय और डी.ए.वी. के दो-दो अध्याय हैं। डी.पी.ई.पी. व एच.बी.एस.ई. का एक-एक अध्याय इस वर्ग में है। अन्य कई प्रकार की विषयवस्तु विभिन्न अध्यायों में थी। जिनसे विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते हैं।

उपसंहार

पाठ्यपुस्तकें सम्प्रेषण का सरल व सुलभ साधन हैं। समाजीकरण के उद्देश्य से यह शोध किया गया था। स्कूली पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से समाज के प्रभावी विश्वास, मूल्य प्रणाली और सिद्धान्तों को परिलक्षित करने का प्रयास किया जाता है। समाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में स्कूली पाठ्यपुस्तकें मूल्य अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए अभिषक्त हैं। अतः कई मूल्यों को महत्व दिया जाना जरूरी है ताकि नई पीढ़ी उन मूल्यों को आत्मसात् कर सके। व्यक्तिगत मूल्यों की अपेक्षा सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है। यदि पाठ्यपुस्तकों की सम्प्रेषण क्षमता और अधिक बढ़ानी है तो उन्हें और अधिक स्पष्ट विषयवस्तु के साथ पाठ्यपुस्तकें डिजाइन करनी पड़ेगी।

संदर्भः

- जेम्स आर स्केवयर, संचार का अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोष ऑक्सपफोर्ड विश्वविद्यालय प्रैस, पेनिसिलवेनिया विश्वविद्यालय, 1989, भाग-4, पृष्ठ सं. 234-236
- वेरोनिका केलमस, सोशलाइजेशन इन द फील्ड ऑफ टेक्सट बुक, तुरतु, इस्टोनिया, 2003, पृ. सं. 5
- मोहिन्दर सिंह, स्टडी ऑफ नेशनलाइज्ड इंग्लिश टेक्सट बुक्स नम 6 टू 10 इन हरियाणा, 1988 पी-एच.डी., कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र
- डेनियल बार ताल, रोकी रोड टूवार्ड पीस, स्कूल ऑफ एजुकेशन, तल अवीव विश्वविद्यालय, इजराइल 2000, पृष्ठ संख्या - 6
- क्रिस्टीनकायमर कान्टीन्यूटी एण्ड चेंज ऑफ वेल्यूस - एन एनालिसिस ऑफ लिटरेरी टेक्सट बुक आफ ताइवनीस जूनियर हाई स्कूल, डब्लू डब्लू डब्लू. सो.एस.ए.सी.यू.के./ताइवानीज स्टडीज फाइल / कॉन्फ 2004 / पेपर्स / पैनल 6 कायमर पेपर